पर्यावरण का संरक्षण

रेटिंग:

विवरण: ?????????, ????????? ???????? ?? ?????? ?? ??????? ?? ??? ?? ????? ?? ????? ?????? ?? ????????? ?? ?? ??????? ??????

श्रेणी: पाठ › इस्लामी जीवन शैली, नैतिकता और व्यवहार › सामान्य नैतिकता और व्यवहार

द्वारा: Imam Mufti (© 2016 NewMuslims.com)

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य

- पर्यावरण के संरक्षण पर इस्लामी निर्देशों की सराहना करना।
- ब्रह्मांड और उसके परिवेश के साथ हमारे संबंधों को समझना।
- यह समझना कि ब्रह्मांड का प्रत्येक प्राणी एक संतुलन में है इसका संरक्षण किया जाना चाहिए।
- जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए कुछ सुझाव जानना।

अरबी शब्द

- *??????* - उपवास तोड़ने का भोजन।

अपने परिवेश के साथ हमारा संबंध

पर्यावरण संरक्षण इस्लाम का एक महत्वपूर्ण पहलू है। पृथ्वी के प्रबंधक होने के नाते, यह मुसलमानों की जिम्मेदारी है कि वे सक्रिय रूप से पर्यावरण की देखभाल करें। विभिन्न प्रजातियों के निर्माण के पीछे एक निश्चित उद्देश्य है, चाहे वह पौधे हों या जानवर। मुसलमानों को जीवित जीवों और उनके पर्यावरण के बीच संबंधों को

प्रतिबिंबित करने और अल्लाह द्वारा बनाए गए पारिस्थितिकि संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस्लामी मान्यताओं के लिए पर्यावरण की सुरक्षा आवश्यक है और पर्यावरण की सुरक्षित अभिरक्षा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी मानवजाति की है।

ब्रह्मांड अपने रूप और कार्य में अत्यधिक विविध है। ब्रह्मांड और उसके विभिन्न तत्व मानव कल्याण को पूरा करते हैं और निर्माता की महानता के प्रमाण हैं। अल्लाह सभी चीजों को निर्धारित और व्यवस्थित करता है और सभी चीज़ें अल्लाह ने बनाई है और ये चीज़ें अल्लाह की प्रशंसा करती हैं।

"क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह ही की पवित्रता का गान कर रहे हैं, जो आकाशों तथा धरती में हैं तथा पंख फैलाये हुए पक्षी? प्रत्येक ने अपनी बंदगी तथा पवित्रता गान को जान लिया है और अल्लाह भली-भांति जानने वाला है, जो वे कर रहे हैं।" (क़ुरआन 24:41)

सभी सृजित प्राणी को सभी प्राणियों के ईश्वर की सेवा करने के लिए बनाया गया है और, एक सुसंगत रूप से तैयार किए गए समाज मे अपनी निर्धारित भूमिकाओं को निभाते हुए वे इस दुनिया में खुद को और एक दूसरे को लाभान्वित करते हैं। इससे एक ब्रह्मांडीय सहजीवन बनता है। ईश्वर ने अपनी बुद्धि से मनुष्यों को पृथ्वी का प्रबंधक बनाया है। इसलिए पृथ्वी का हिस्सा और ब्रह्मांड का हिस्सा होने के अलावा, मनुष्य ईश्वर के आदेशों और आज्ञाओं का निष्पादन करने वाला भी है। वह केवल पृथ्वी का प्रबंधक है, मालिक नहीं, लाभार्थी है और निपटानकर्ता नहीं। इस्लाम में, संसाधनों का उपयोग सभी लोगों और सभी प्रजातियों का अधिकार और विशेषाधिकार है। इसलिए, मनुष्य को अन्य सभी के हितों और अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए हर सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि वे पृथ्वी पर समान भागीदार हैं। मनुष्य को प्राकृतिक संसाधनों का दुष्प्रयोग, दुरूपयोग या विकृतीकरण नहीं करना चाहिए क्योंकि प्रत्येक पीढ़ी उनसे लाभ पाने की हकदार है और पूर्ण अर्थों में उन्हें "स्वामित्व" करने का अधिकार नहीं है।

इसके अलावा, सभी मनुष्यों और वास्तव में, पशुधन और वन्य जीवन को भी पृथ्वी के संसाधनों में हिस्सा लेने का अधिकार प्राप्त है। मनुष्य का किसी भी संसाधन, जैसे जल, वायु, भूमि और मिट्टी के साथ-साथ अन्य जीवित प्राणियों जैसे पौधों और जानवरों का दुरुपयोग करना निषिद्ध है, और सभी जीवित और बेजान संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग निर्धारित है। प्राकृतिक संसाधनों के विकास और संरक्षण का एकीकरण भूमि पर जीवन लाने और कृषि, खेती और निर्माण के माध्यम से इसे फलने-फूलने के विचार में स्पष्ट है। अल्लाह कहता है:

"...उसीने तुम्हें धरती से उत्पन्न किया और तुम्हें उसमें बसा दिया..." (क़ुरआन 11:61)

ईश्वर मनुष्य से जीवन के इस आवश्यक स्रोत के मूल्य की सराहना करने को कहता है:

“आप कह देः भला देखो यदि तुम्हारा पानी गहराई में चला जाये, तो कौन है जो तुम्हें ला कर देगा बहता हुआ जल?” (क़ुरआन 67:30)

जीवन के आधार के रूप में पानी के महत्व के कारण, ईश्वर ने इसका उपयोग सभी जीवित प्राणियों और सभी मनुष्यों के सामान्य अधिकार के रूप में किया है। पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने कहा:

“मुसलमानों को इन तीन चीजों को आपस मे बांटना चाहिए: पानी, चारागाह और आग।” (अबू दाऊद)

जीवन को बनाए रखने और संरक्षित करने के लिए हवा पानी से कम महत्वपूर्ण नहीं है, यह परागन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ईश्वर ने कहा है:

“और हमने जलभरी वायुओं को भेजा...” (क़ुरआन 15:22)

पृथ्वी के खनिजों से हमारे शरीर के साथ-साथ सभी जीवित जानवरों और पौधों के ठोस घटक बनते हैं। ईश्वर ने क़ुरआन मे कहा है:

“और उसकी (शक्ति) के लक्षणों में से ये भी है कि तुम्हें उत्पन्न किया मिट्टी से, फिर अब तुम मनुष्य हो (कि धरती में) फैलते जा रहे हो।” (क़ुरआन 30:20)

इस्लामी कानून के मूलभूत सिद्धांतों में से एक पैगंबर की घोषणा है:

“कोई क्षति नहीं होगी और क्षति का कोई दंश नहीं होगा” (अल-हकीम)

अमेरिकी हर साल 40% खाद्य आपूर्ति को बर्बाद कर देते हैं और चार लोगो का औसत अमेरिकी परिवार भोजन में सालाना 2,200 डॉलर के बराबर फेंक देता है। 55 वर्ग फुट उष्णकटिबंधीय वर्षावन, वर्षावन मवेशियों से बने फास्ट-फूड हैमबर्गर के उत्पादन के लिए नष्ट कर दिया जाता है।

भले ही अमेरिकी दुनिया की आबादी का केवल 5% हिस्सा हैं, लेकिन वे दुनिया की 24% ऊर्जा का उपभोग करते हैं। पैगंबर के समय में यदि इफ्तार के भोजन में स्टायरोफोम कप का उपयोग हुआ होता, तो इसका पता होता। स्टायरोफोम एक प्रकार का फोमयुक्त प्लास्टिक है जो कभी भी विघटित नहीं

होता है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए युक्तियां

- पैदल चलें, साइकिल चलाएं या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें।
- कम ईंधन उपयोग करने वाली कारों का प्रयोग करें।
- बिजली और पैसे बचाने के लिए अपने घर का एनर्जी ऑडिट करवाएं।
- हरित ऊर्जा, ऊर्जा दक्ष प्रकाश बल्ब और उपकरणों का इस्तेमाल करें।
- कपड़े सुखाने के लिए धुप मे रस्सियों का प्रयोग करें, ड्रायर का नहीं।
- नहाते समय या वुज़ू करते समय पानी बचाएं।
- ताजा और स्थानीय भोजन खरीदें - बर्फ वाले नहीं।
- किसानों के बाजारों में जाएं।
- मांस कम खाएं।
- जंक फ़ूड न खाएं।
- पुनर्नवीनीकरण कागज का प्रयोग करें।
- खरीदारी करते समय कपड़े के थैले का प्रयोग करें।

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/hi/articles/331

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।